B.A.-1, FIRST SEMESTER

प्रारम्भिक बाल्यावस्था में सामाजिक विकास

Social Development in Early childhood

(2 से 6 वर्ष की अवस्था)

- ❖ **अर्थ:**

जन्म के समय शिशु न सामाजिक होता है और न असामाजिक बल्कि वह समाज के प्रति उदासीन होता है। आयु बढ़ने के साथ साथ वह सामाजिक गुणों से सुशोभित होता जाता है और कुछ वर्षों बाद वह सामाजिक प्राणी कहलाने लगता है।

- ❖ **परिभाषा-**

E.H. Harlock के अनुसार, ''सामाजिक विकास का अर्थ योग्यता को अर्जित करना है जिसके द्वारा सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुसार व्यवहार किया जा सके। ' '

- ❖ **प्रारम्भिक बाल्यावस्था में सामाजिक विकास-**
- ❖ 2 से 6 वर्ष अवस्था में यह देखा गया है कि बालकों में जो अभिवृत्तियाँ निर्मित होती हैं अथवा वह जो सामाजिक व्यवहार सीखता है वही आगे तक बना रहता है या उसमें थोड़ा परिवर्तन होता है।

  - इस अवधि में बच्चे स्कूल जाना प्रारम्भ कर देते हैं अतः सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है।
  - दो वर्ष का बालक स्वतंत्र रूप से खेलना पसन्द करता है।

- 3 से 4 वर्ष की अवस्था में बालकों में सामूहिक खेल प्रारम्भ हो जाते हैं।
- इस अवस्था में बालक जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है उनमें मित्रता के व्यवहार बढ़ते जाते हैं।
- 2 वर्ष के बाद की आयु में बालक वयस्क व्यक्तियों के पास कम रहना पसन्द करते हैं और अपनी आयु के बच्चों के साथ अधिक रहना पसन्द करते हैं।
- इस अवस्था में बच्चों में माता-पिता की अपेक्षा वाह्य व्यक्तियों का अधिक प्रभाव होता है।

❖ **पूर्व बाल्यावस्था के कुछ प्रमुख सामाजिक व्यवहार**

1. **खेल-** प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बालक खेलों को इसलिये पसन्द करता है कि खेल उसे आनन्द प्रदान करते हैं। पांच-छ वर्ष की आयु तक बालक 5-6 बालकों के समूह में खेलना प्रारम्भ कर देते हैं।
2. **अनुकरण-** 3-4 वर्ष का बालक परिवार के सदस्यों का अनुकरण करता है। इस अवस्था में समाज और समूह के साथियां का अनुकरण करके बहुत कुछ सीखता है।
3. **निषेधात्मक-** आज्ञा के विपरीत कार्य करने की प्रवृत्ति इस अवस्था में अपनी चरम पर पायी जाती है। बालक अपनी बात की स्वीकारोक्ति के लिये वह निषेधात्मक

व्यवहार जैसे- जमीन पर लोटना, वस्तुओं को तोड़ना, छोटे बच्चों को मारना, चिल्लाना तथा बड़ो की अवज्ञा प्रदर्शित करते हैं।

4. **झगड़ा और मारपीट-** इस अवस्था में बालक अपने सम्मान के प्रति जागरूक हो जाता है। खेलों के समय झगड़े तथा मारपीट के लक्षण प्रकट होते हैं।
5. **सहयोग और सहानुभूति-** इस अवस्था में बालक माता पिता तथा परिवार के सदस्यों के प्रति सहयोग और सहानुभूति का प्रदर्शन करता है। बालक में साथियों के प्रति भी यह भावना शारीरिक एवं मानसिक कष्टों के समय में स्पष्ट दिखायी पड़ती है।
6. **चिढ़ाना और तंग करना-** 5-6 वर्ष के बालक अपने साथियों को ही नहीं बड़ों को भी चिढ़ाते हैं और ऐसा करके वे प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।
7. **आक्रामकता-** इस व्यवहार का प्रारम्भ दो वर्ष की अवस्था में होता है और आयु वृद्धि के साथ बढ़कर 5 वर्ष की अवस्था में अपनी चरम सीमा तक पहुंच जाता है। आक्रमकता का प्रदर्शन बालक विभिनन तरीके से करता है जैसे- मुटठी कींचना, मारना, वस्तुओं को तोड़ना-फोड़ना, रोना, चिल्लाना, चीखना आदि। आयु वृद्धि के साथ आक्रामक व्यवहारों के प्रदर्शन का समय बढ़ता जाता है।
8. **ईर्ष्या-** बालकों में ईर्ष्या की भावना का विकास 3 से 6 वर्ष की अवस्था में होता है। इस अवस्था में ईर्ष्या का प्रमुख कारण प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा होती है। ईर्ष्या की उपस्थिति में बालक लड़ाई-झगड़ा करता है।

9. **प्रतियोगिता-** 3 वर्ष की अवस्था में बालकों में प्रतियोगिता की भावना का विकास देखा जाता है। 4 वर्ष का बालक उत्तमता और श्रेष्ठता के भाव को अच्छी तरह समझता है इसलिये दूसरों से अच्छा कार्य करने और श्रेष्ठ बनने का प्रयत्न करता है।

10. **मित्रता-** 2-3 वर्ष की अवस्था में मित्रता की भावना का विकास हो जाता है। लगभग 5 वर्ष की अवस्था में मित्रता का भाव अधिक स्थायी हो जाता है।

❖ **सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक-**

• स्वास्थ्य एवं शारीरिक बनावट	• पारिवारिक वातावरण
• विद्यालय	• मनोरंजन के अवसर
• बालकों के समूह के साथ	• बालकों का व्यक्तित्व
• वृद्धि	• लिंगभेद
• संस्कृति	• आर्थिक स्थिति
• भाषा विकास	• खेलों में रूचि

सामाजिक

1. बालक के सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है-

   (a) समाज (b) परिवार

   (c) विद्यालय (d) उपर्युक्त तीनों की

2. बालक के सामाजिक विकास का अर्थ है-

   a. सामाजिक गुणों एवं व्यवहारों की उत्पत्ति
   b. समाज में रहना
   c. विचारों का आदान-प्रदान करना
   d. इनमें से कोई भी नहीं

3. ईर्ष्या की तीव्रता देखी जा सकती है-

   (a) 3 से 4 वर्ष (b) 1 से 2 वर्ष

   (c) 3 से 6 वर्ष (d) 2 से 4 वर्ष

4. दिवास्वप्न का अर्थ है-

   (a) काल्पनिक जगत से (b) वाह्य जगत से

   (c) आन्तरिक जगत से (d) (a) व (b) दोनों से

5. जमीन पर लोटना एवं वस्तुओं को तोड़ना किस प्रकार का व्यवहार है-

   (a) सामाजिक व्यवहार (b) शारीरिक व्यवहार

   (c) निषेधात्मक व्यवहार (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- 1-d, 2-a 3-a, 4-a, 5.c